Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIII, January-2014, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

REVIEW ARTICLE

संगारिया कस्बे के दम्पतियों की नजर में भारतीय नारी की समाज में भूमिका व उसका बदलता स्वरूप

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIII, January-2014, ISSN 2230-7540

संगारिया कस्बे के दम्पतियों की नजर में भारतीय नारी की समाज में भूमिका व उसका बदलता स्वरूप

Gayatri Chugh

Supervisor W.C.D Department

---------------------------------X---------------------------------

प्रस्तावना :

''मातृ देवो भव'' के अनुपम उदघोश से अनुप्राणित हमारी भारतीय संस्कृति में स्त्रियो का सदा से ही गौरवपूर्ण स्थान रहा है। नारी में करूणा, ममता, स्नेह सहिश्णुता आदि गुण स्वाभाविक रूप से ही विद्यमान रहते है। यंत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता कहकर मनु ने उसके गौरव को द्विगुणित कर दिया है। प्रत्येक मनुश्य की सफलता के पीछे किसी न किसी नारी का हाथ होता है। तुलसी को तुलसीदास को श्रेय भी उसकी पत्नी रत्नावती को जाता हैं ऐसे ही अनेक उदाहरणो से भारतीय अतीत भरा पडा है।

मुगल व सल्तनत काल में भी समय–समय पर षासन की बागडोर स्त्रियो हाथो में रही है। आवष्यकता पडने पर बडी से बडी जिम्मेदारी को नारी ने सफलता पूर्वक निभाया है। आज नारी एक रूप में दो युगो का आदर्ष लिए हुए है। इसलिए कदाचित आधुनिक नारी अधिक समस्याओ का सामना कर रही हैं वही दूसरी और हमारे समाज की अनेक नारियॉ राजनैतिक, आर्थिक ओर सामाजिक क्षेत्रो में प्रतिनिधित्व प्राप्त करके आधुनिक नारी के सम्मान की रक्षा कर रही है। आधुनिक नारी के कर्तव्य क्षेत्र उल्लेखनीय है कि आज नारी पुलिस व सैनिक सेवाओ मे भी बराबरी की भागीदारी निभा रही है।

सभी जानते है कि नारी से घर का निर्माण होता है। इसलिए उसे गृहणी कहा जाता है। परन्तु आधुनिक भारत में कामकाजी महिलाओ की संख्या में काफी वृद्धि हुई है, इसलिए घर के साथ–साथ बाहर भी सफलतापूर्वक अपनी जिम्मेदारियां वहन कर रही है। वे अब समझने लगी है कि नौकरी करने से उन्हे एक व्यक्तिगत दर्जा तथा एक स्वतंत्र सामाजिक अस्तित्व मिलता है। नारी के निजी दर्जे व सामाजिक महता में परिवर्तन लाने के साथ–साथ उसके सोचने तथा महसूस करने के ढंग में भी नागरिक समुदाय और संगठित समाज की समस्याएं है।

इस प्रकार हम देखते है कि एक आदर्ष नारी से ही आदर्ष परिवार से समाज व समाज से ही एक आदर्ष देष का निर्माण होता है।

परिवार में नारी की भूमिका :– प्रत्येक क्षेत्र में नारी की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण है लेकिन परिवार में नारी की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। भूतकाल वर्तमान व भविश्य किसी भी समय को लेकर नारी निम्न रूपो में परिवार में भूमिका निभाता है:–

1. **पत्नी के रूप में भूमिका :** परिवार में नारी का प्रथम अस्तित्व एक पत्नी के रूप में है। वह अपना समय, विचार–विमर्ष व सम्पूर्ण परिश्रम परिवार पर लग देती है तथा परिवार की खुषहाली के लिए अपनी हर इच्छा का त्याग कर देती है। पत्नी पति से सलाह कर कार्य करती हैं व पति के अच्छे बूरे समय में उसका साथ देती है। वह घर के वातावरण को हर हाल खुष बनाने का प्रयत्न करती है जिनी भ्ज्ञी आय पति उसे लाकर देता है। चाहे वह अधिक हो या कम, पत्नी उन्ही पैसो से घर चलाती है। वह बजट के अनुसार खर्च करके अपना कर्तव्य व उत्तरदायित्व पूरा कर दूसरो व अपने को खुष रखती है।

2. **माता के रूप मे भूमिका :** नारी के जीवन का सबसे सुखद क्षण वह होता है। जब वह मॉ बनती है। नारी का यह रूप सम्पूर्ण संसार में श्रेश्ठ व निस्वार्थ माना जाता है। वह अपने इस दायित्व को निभाने में सम्पूर्ण जीवन प्रदान कर देती है। माता ही यर्थात में परिवार क निमात्री होती है। माता का उतरदायित्व संतान के जन्म तक सीमित नही है। वरन् उस संतान को अच्छी से अच्छी षिक्षा देने का प्रयास भी करती है। माता अपना सारा ध्यान संतान पर केद्रित रखती है। वह उसमें आत्म सम्मान, आत्म विष्वास व ईमानदारी की भावना विकसित करती है। बच्चे को घर में माता जैसी षिक्षिका घर में मिलती है। जो उसे देष को स्वस्थ व जागरूक नागरिक बनाने का प्रयास करती है। अतः माता एक केन्द्रित व्यक्तित्व है जो अपनी सन्तान व प्रत्येक सदस्य को स्नेह व समझदारी से एक–दूसरे को जोडती है।

3. **पुत्री के रूप में भूमिका :** जहां तक परिवार की मर्यादाओं को निभाने को प्रष्न है एक पुत्र की अपेक्षा पुत्री इस जिम्मेदारी से निभाने का प्रयास करती है। पुत्री घर में इस जिम्मेदारी से निभाने का प्रयास करती है। पुत्री घर में उपस्थित सभी उतरदायित्वो को ठीक वेसे ही निभाती है जैसे उसकी मॉं। वह अपने छोटे भाई–बहनो को माता जैसा प्यार व बडे भाई–बहनो को मता–पिता के समान मानती है।

4. पुत्र वधु के रूप में भूमिका : पुत्र वधु का प्रथम उतरदायित्व अपने पति के प्रति होता है। नारी का यह रूप पवित्र है उसे प्रत्येक सदस्य से अलग–अलग

www.ignited.in

सास,ससुर, देवर, ननद आदि के प्रति उसके उतरदायित्व अलग–अलग है। परिवार के सदस्यो से यथा योग्य आदर और प्रेम का व्यवहार करती है। वह परिवार की रीति–रिवाजो, रहन–सहन के तरीको, आदर्षो मान्यताओ को समझकर तदानुकूल स्वयं को ढालने की कोषिष करती है।

इस प्रकार वह अनके भूमिकाओ को निभाते हुए अपने को व अपने परिवार को सुखी खुषहाल बनाने का प्रयास करती है।

भूतकाल में समाज में नारी की स्थिति व भूमिका को जनने हेतु भूतकाल में नारी की स्थिति व भूमिका की अवलोकना करते है।

भारतीय समाज में नारी की स्थिति का ऐतिहासिक विवरण

समाज में स्त्री का स्तर सामाजिक संगठन की षक्ति का प्रतीक रहा है व ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह स्पश्ट होता है। कि स्त्री ने वैदिक काल में पुरूशो के समक्ष समानता व प्रतिश्ठा का प्रयोग किया। ऐसा माना जाता है कि सृश्टि के उदगम में ब्रहमा जी को भी सृश्टि की रचना के लिए नारी की आवष्यकता पडी और उन्होने मानस पटल का निर्माण कर उनके सहयोग से सृश्टि की रचना की। ऐसी मान्यता है कि सृश्टि की रचना में नारी बराबर की हिस्सेदारी है। यहां तक महात्मा बृद्ध के समय भी नारी अपनी षेक्षणिक बौद्ध साहित्य में सहयोग देने के कारण सम्मानित मानी जाती है। इसके अलावा कई स्त्रियो ने बौद्धिक साहित्य की रचना में सहयोग दिया। जैसे–मैत्रयी।

भूतकाल में नारी की स्थिति व भूमिका जानने के लिए विभिन्न युगो मे नारी की स्थिति व भूमिकोओ का अवलोकन हैः–

1. **वैदिक काल** :– वैदिक काल में नारी की स्थिति अच्छी थी। इस युग में स्त्रियो को षास्त्र की षिक्षा का पूर्ण अधिकार था। विवाह के समय स्त्री की इच्छा को अधिक महत्व दिया जाता था। नारी को इस युग में पुजनीय मानने की प्रथा थी।

2. **धर्म शास्त्र** :– इस युग में असहाय व परतंत्र मानी जाने लगी। स्त्री के लिए विवाह को एक संस्कार माना गया है। स्त्रियो को सम्पति के अधिकार से वंचित कर दिया गया । मानसिक रूप से दुर्बल माना गया । इस काल के अंत में स्त्री को वस्तु के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। जिसे पुरूश अपनी इच्छानुसार प्रयोग कर सकता था।

3. **मध्यकाल** :– इस युग में स्त्रियो को सर्वाधिक पतन हुआ। पर्दा प्रथा, सती।

4. **ब्रिटिश काल** :– स्त्रियो की स्थिति निम्न रही। सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक क्षेत्रो में स्त्रिया पिछडी रही। परन्तु फिर कुछ नारियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति की लडाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

5. **स्वतत्रंता प्राप्ति के पश्चात** :– स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्त्रियो ने सामाजिक, आर्थिक हर क्षेत्र में प्रगति की। लेकिन ग्रमीण स्त्रियो की अपेक्षा षहरी स्त्रियां अधिक जागरूक हुई व आज किसी क्षेत्र में स्त्रियां पुरूशो से कम नही है।

6. **वर्तमान में भारतीय नारी की स्थिति** :– वर्तमान में भारतीय नारी अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण रूप से निभाती है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो। वह घर व बाहर दोनो क्षेत्रो में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

भारतीय नारी का समाज में बदलता स्वरूप

वर्तमान में नारी के कार्य क्षेत्र का दायरा बढा है। अब उसके स्वरूप में बदलाव आया। भारतीय नारी के बदलते स्वरूप की अवलोकना हम इस प्रकार करेंगे।

वर्तमान में नारी की स्थिति पहले से उच्च है। अनेक कानून बनाए गए है। लडके की विवाह की उम्र 21 व लडकी की 18 कर दी गई है। दहेज लेना व देना मना है। अंर्तजातीय विवाह को मान्यता मिल गई है। अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता है कला–विज्ञान सभी में षिक्षा प्राप्त कर रही है। आज वह घर की चार दीवार तक सीमित नही है। वह बाहर भी नौकरी करती है। अब बच्चो की षिक्षा, परिवार की आय के उपयोग, पारिवारिक अनुश्ठानो में स्त्री की इच्छा सर्वोपरी मानी जाती है।

1. **सामाजिक क्षेत्र में महिलाऐं** :– भारतीय समाज में महिलाओ की आधी आबादी है व समाज का सर्वागीण विकास तभी होगा जब महिलाओ की बराबर भागीदारी हो। आज किसी क्षेत्र में महिलाएं पीछे नही है। सामाजिक क्षेत्र में परम्परागत काल की अपेक्षा नारी की स्थिति अच्छी है। पहले जो औरतें घर से बाहर झांक तक नही सकती है। वह आज घर के बाहर नौकरी कर रही है। पार्टियों का आयोजन करती है।

समाज में अपने कार्य क्षेत्र का दायरा बढा लिया है। समाज के प्रति हर जिम्मेदारी को दायित्वपूर्ण ढंग से निभा रही है। आज समाज में भी नारी के प्रति सम्मान व आदर की भावना बढ गयी है।

2. **उच्च आर्थिक स्थिति** :– आज नारी प्रगति की और जा रही है। उसे जीवन यापन के लिए किसी के सहारे की जरूरत नही है। नारी ने अपने अधिकारो के लिए लडना सीख लिया है। आज की नारी स्वावलम्बी हैं वह स्वयं पर व्यय करने के लिए धन प्राप्ति हेतु किसी पर आश्रित नही रहना चाहती है। वह अपने साथ–साथ अपने पूरे परिवार का भरण पोशण कर सकता है।

आज नारी वकील, डाक्टर, इंजीनियर आदि हर क्षेत्र में है। कल्पना चावला ने तो नारी के गौरव में चार चांद लगा दिये है। आज कोई भी कार्य नही है जो वह नही कर सकती है।

3. **शिक्षा के क्षेत्र में** :– स्त्रियो की शिक्षा का प्रतिषत हालांकि पुरूशो की तुलना में कम है पर फिर भी पहले की अपेक्षा स्त्री षिक्षा में वृद्धि हुई है व दिन प्रतिदिन शिक्षा का प्रतिषत सुधर रहा है। वर्तमाना में लोगो ने अनुभव किया है। कि स्त्री षिक्षा महत्वपूर्ण है।

स्त्री षिक्षा सामाजिक व आर्थिक कारणो का भी महत्वपूर्ण योगदान है। सामाजिक रूप से एक षिक्षित लडकी को अशिक्षिता से तरजीह दी जाती है। और यह स्त्री शिक्षा को बढाने में बहुत महत्वपूर्ण तत्व है। क्योंकि लडकी का विवाह करना एक अनिवार्य कर्तव्य है।

आज लडकियों बडे–बडे कम्पीटीषन पास कर रही है। यहां तक कि आई.ए.एस. व आर.ए.एस. में भी वह पीछे नही है। आज लडकी षिक्षा के बल पर डाक्टर इंजीनियर षिक्षिका व्यापर सभी क्षेत्रो में आगे है।

4. राजनैतिक क्षेत्र में :– नवीन पंचायज राज व्यवस्था के तहत निर्वाचन में महिला भागीदारी का ठोस प्रयास किया गया है। इसी अनुक्रम में विधायिका में भी महिलाओ को 33 प्रतिषत सीटो के आरक्षण किये जाने का प्रस्ताव 81वां संषोधन सांसद में विचारधीन है राजनैतिक सता केन्दो पर महिलाओ की भागीदारी से जन मानस में व्याप्त संकीर्णताओ का अंत हुआ।

वर्तमान में स्त्री प्रजातंत्र में राजनैतिक दल निर्वाचन व्यवस्था की रीढ है। भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, जनता पार्टी जैसी बडी–बडी पार्टिया भी महिला को अपना उम्मीदवार बना रही है। श्रीमति इंदिरा गांधी में एक दषक से भी ज्यादा देष की सता संभाली है व अनेक उल्लेखनीय व महत्वपूर्ण कार्य किये है वर्तमान में भी सुशमा स्वराज, उमा भारती आदि महिलाएं राजनीति में अपना जौहर दिखा रही है। आज नारी लोकसभा व विधानसभा , पंचायत सभी जगह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

5. प्रषासनिक क्षेत्र में :– प्रषासनिक क्षेत्र में महिलाए अनेक उल्लेखनीय व महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। वह आईएएस, आरएएस, आईपीएस आदि में आगे आ रही हैं व अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण ईमानदारी से निभा रही है। वह पुरूशो की अपेक्षा अच्छा कार्य प्रदर्षन कर रही है। निष्चित रूप से महिलाओ का प्रषासन में आने से भ्रश्टाचार व घोटालो का अंत होगा।

6. कला के क्षेत्र में :– एक समय था जब महिलाओ का घर से बाहर तक निकलने पर पाबदी थी। अगर उसमें कोई खास कला होती भी है तो उसे यह बात अपने अंदर दबा कर रखनी पडती है। परन्तु अब ऐसा नही हैं आज वह कविताए लिखती, उपन्यास लिखती है अभिनेत्री आदि किसी भी कला के क्षेत्र में पीछे नही है। अगर उसमे कोई हुनर है तो उसे यह दिखाने का पूरा–पूरा मौका मिलता है। अरून्धती राय हाल ही में अपने हुनर के कारण विख्यात हुई है और भी ऐसे उदाहरण आधुनिक भारत में देखने को मिलते है।

सकारात्मक प्रभाव :–

नारी के बदलते स्वरूप ने ना सिर्फ नारी पर वरन पूरो समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला है जो निम्न प्रकार है।

1. महिलाएं आर्थिक रूप से आत्म निर्भर हो गई है अब घर के चुल्हे चौके तक सीमित नही रही ।

2. पारिवारिक दबाव कम हो गया है इसलिए वह स्वतंत्रता पूर्वक कोई भी कार्य कर सकती है।

3. अधिकारो के प्रति जागरूक हो गई है।

4. विवाह संबंधो में स्वतंत्र है।

5. बाल विवाह, सती प्रथा आदि कुरितियां खत्म होने में मदद मिली है।

6. कानूनी क्षेत्रो में पुरूशो से समानता है।

7. बच्चो व परिवार का पालन पोशण पहले से अच्छा कर रही है।

8. अशिक्षित नही रही। बडी–बडी डिग्रीयों से सुशोभित है।

हां/ नही

21. आज की बढती मंहगाई एवं बढती आवश्यकताओ के कारण घर की महिला को आर्थिक योगदान देना चाहिए। ☐ ☐

22. क्या पुरुश अपने से अधिक कमाने वाली स्त्री से षादी करना पसंद करते है। ☐ ☐

23. क्या नौकरी–पेषा नारी परिवार व बच्चो की देखभाल भली प्रकार से कर पाती है। ☐ ☐

24. क्या नौकरी–पेषा स्त्रीयों के प्रति समाज का दृश्टिकोण धनात्मक है। ☐ ☐

25. घरेलू स्त्री को जिस सम्मान से समाज में देखा जाता है क्या नौकरी–पेषा स्त्री को भी वही सम्मान मिलता है। ☐ ☐

QUESTIONNAIRE

(भारतीय समाज में नारी की भूमिका व बदलता स्वरूप)

नाम...आयु................षिक्षा का स्तर................

हां/नही

1. क्या आज के समाज में नारी की भूमिका बदल रही है? ☐ ☐

2. क्या बदलती भूमिका का कारण शिक्षा है ? ☐ ☐

3. क्या बदलती भूमिका का कारण शिक्षा है ? ☐ ☐

4. क्या षिक्षा के कारण ही नारी अपने अधिकारो के प्रति जागरूक हुई है ? ☐ ☐

5. क्या नारी शिक्षा अनिवार्य कर दी जानी चाहिए ? ☐ ☐

6. क्या आज की नारी पारिवारिक दायरे से निकल कर राजनैतिक साहित्यक व तकनीकी हर क्षेत्र में अपना स्थान बना रही है ? ☐ ☐

7. आज नारी हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है तो क्या यह समाज को धनात्मक शिक्षा में ले जा रहा है ? ☐ ☐

8. क्या आपको लगता है कि नारी का पारिवारिक दायरे से निकलना हमारे भारतीय समाज द्वारा कबुल कर लिया गया है ? ☐ ☐

9. क्या नारी का कार्य क्षेत्र केवल घर तक ही सीमित होना चाहिए ? ☐ ☐

10. क्या आप नारी के आत्मनिर्भर होने को उचित मानते है? ☐ ☐

11. क्या लडकी की शादी की उम्र 18 वर्श उचित है ? ☐ ☐

12. क्या जीवन साथी का चुनाव माता–पिता के द्वारा होना उचित है ? ☐ ☐

13. क्या आत्मनिर्भर होने के पश्चात लडकी की शादी करना उचित है या उम्र ज्यादा है ? ☐ ☐

14. क्या आज सभी लोग शिक्षित नारी को ही जीवन साथी बनाना चाहते है ? ☐ ☐

15. क्या 18 वर्ष के पश्चात गर्भधारण की उम्र उचित है ? ☐ ☐

16. क्या गर्भनिरोधक उपाय नारी की भूमिका का स्वरूप पर प्रभाव डालते है ? ☐ ☐

17. क्या आज की नारी की स्थिति आज भी बच्चा पैदा करने वाली मषीन की तरह है ? ☐ ☐

18. क्या आज यौन शिक्षा की आवष्यकता है ? ☐ ☐

19. क्या परिवार नियोजन एवं गर्भ निरोधक उपायो के प्रति आज की नारी जागरूक है ? ☐ ☐

20. क्या आप को पता है कि भारतीय नारी को मातृत्व अधिकार प्राप्त है ? ☐ ☐

संदर्भ सूची

1. तिवारी, आर.पी. एवं षुक्ला, डी.पी. (1999); भारतीय नारी : वर्तमान समस्याएं और भावी समाधान; ए.पी.एच. पब्लिषिंग कॉरपोरेषन, नई दिल्ली पृश्ठ संख्या 15–26, 29–44

2. हसन, मोजम्मिल 'आरजू'' (1993); भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण कामनवेल्थ पबिलषर्स नई दिल्ली, पृश्ठ संख्या 16–57

3. मुकर्जी, रविन्द्र नाथ (1994); भारतीय समाज एवं संस्कृति; विवेक प्रकाशन दिल्ली पृश्ठ संख्या 408–420.

4. Pruthi Raj Kumar, Devi Ramesh Wari, Pruthi Romila, (1991); Encyclopaedia of status and Empowerment of women in india; (Vol. III), Mangal Deep Publication Jaipur, Page No. 1-47

5. Mitra Jyoti, (1991); Women and Society-Equality and Empowerment; Kanishka Publication, Distributors New Delhi Page No. 14-42

25. 75 प्रतिशत स्त्रियो का मानना था कि नौकरी पेषा स्त्री को समाज मे सम्मान से देखा जाता है जबकि 25 प्रतिषत स्त्रियो का मानना था कि स्त्री को सम्मान से नही देखा जाता है।

66 प्रतिशत पुरूषों की मान्यता थी कि नौकरी पैषा स्त्री को सम्मान से देखा जाता है जबकि 34 प्रतिषत पुरूशो का मत था सम्मान से नही देखा जाता है।

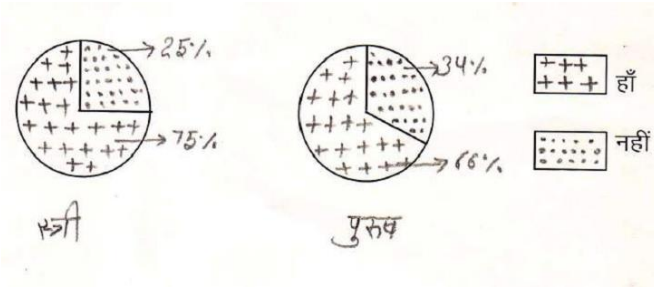

निष्कर्ष :– प्रत्युतरदायियो का एक बहुत बडे भाग की मान्यता थी कि आज नारी को घर मे आर्थिक योगदान देना चाहिए। परन्तु फिर भी 80 प्रतिषत पुरूश अपने से अधिक कमाने वाली लडकी से षादी करना पसंद नही करते हैं अधिकतर जनसंख्या का मत था कि नौकरी पेषा स्त्री समाज को धनात्मक दिषा में ले जा रही है व कमाऊ स्त्री को समाज में सम्मान से देखा जाता है।

उपरोक्त तथ्यो के आधार पर हम कह सकते है कि आजकल छोटे कस्बो में भी नारी की स्थिति में बदलाव आया है। जिसका कारण मुख्यतः शिक्षा है। अब नारी के प्रति पुरूशो का नजरिया भी बदल गया है। आज की नारी आत्मनिर्भर बनना चाहती है। वह परिवार नियोजन व गर्भ निरोधक उपाो के प्रति भी सजग है। व अपने अधिकारो से भी परिचित हैं इस प्रकार आज की षिक्षित नारी से एक आदर्श समाज की कल्पना कर सकते है हालॉकि इतना सुधार ही प्रर्याप्त नही है। अभी भी नारी को और आगे बढना है व एक आदर्श समाज की स्थापना करनी हैं

20. 50 प्रतिशत स्त्रियों को पता कि भारतीय नारी को मातृत्व का अधिकार प्राप्त है जबकि 50 प्रतिशत स्त्रियो इस विषय में नही जानती थी।

86 प्रतिशत पुरूष भारतीय नारी के मातृत्व के अधिकार के बारे में जानते थे जबकि 14 प्रतिषत पुरूश इस विशय के बारे में जानकारी नही रखते है।

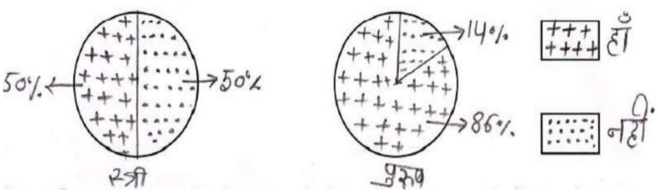

निष्कर्ष :– जीवन साथी के चुनाव के विशय में ज्यादातर लोगो का सोचना था कि जीवन साथी का चुनाव माता–पिता द्वारा ही होना चाहिए। लडकी की षादी भी आत्मनिर्भर होने के पश्चात करनी चाहिए जबकि बहुत कम प्रतिशत लोगो का विचार था कि

आत्मनिर्भर होने तक लडकी की उम्र बहुत ज्यादा हो जाती है। लगभग सभी लोगो का विचार था कि आजकल सभी पढी लिखी लडकी से ही षादी करना पसंद करते है। 100 प्रतिषत लोग 18 वर्श के पश्चात गर्भ धारण को उचित मानते है। जनसंख्या के बहुत बडे भाग ने यौन षिक्षा की आवष्कता पर बल दिया । अत्यधिक आष्चर्य की बात इस सर्वेक्षण के दौरना आई कि 50 प्रतिषत स्त्रियां जो उच्च षिक्षा प्राप्त थी, मातृत्व के अधिकार से अवगत नही थी।

21. 94 प्रतिषत स्त्री पुरूशो का विचार था कि नारी को घर में आर्थिक योगदान चाहिए जबकि 6 प्रतिषत स्त्री व पुरुश इससे असहमत थे।

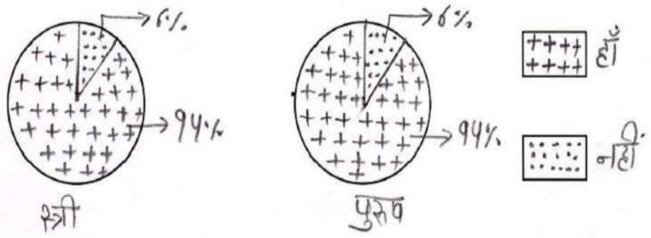

22. यह पूछे जाने पर कि क्या पुरूश अपने से अधिक कमाने वाली स्त्री से शादी करना पसंद करते है तो सिर्फ 10 प्रतिशत स्त्रियां इसे सहमत थी व 90 स्त्रियां इससे असहमत थी।

20 प्रतिशत पुरूष उपरोक्त प्रश्न से सहमत थे जबकि 80 प्रतिशत असहमत थे।

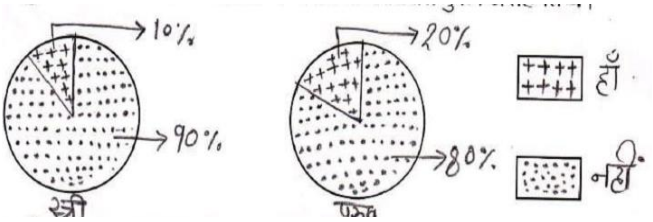

23. 60 प्रतिशत स्त्रियों का मानना था कि नौकरी पेशा नारी परिवार व बच्चो की देखभाल भली प्रकार से सकती है जबकि 40 प्रतिशत महिलाएं इससे सहमत नही थी। 66 प्रतिशत पुरूश उपरोक्त प्रष्न से सहमत थे जबकि 34 प्रतिशत असहमत थे।

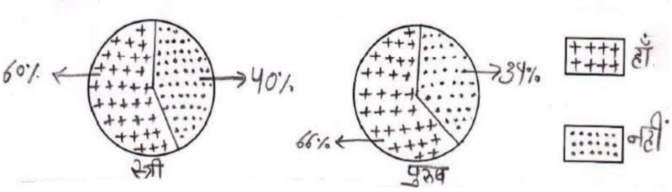

24. जब पूछा गया कि नौकरी पेशा स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोण धनात्मक है तो 65 प्रतिशत स्त्रियो का मानना था कि धनात्मक है व 35 प्रतिषत स्त्रियो का मानना था कि ऋणात्मक है।

60 प्रतिशत पुरूशो का मानना था कि धनात्मक है व 40 प्रतिशत का मानना था कि ऋणात्मक दृश्टिकोण है।

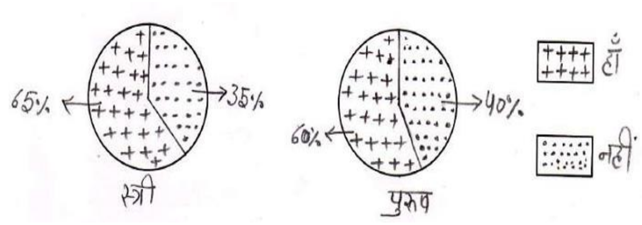

60 प्रतिशत पुरूशो का भी यह मत था गर्भ निरोधक उपाय नारी की भूमिका को प्रभावित करते है 40 प्रतिषत पुरूशो का मानना था ये साधन नारी के स्वरूप को प्रभावित नही करते ।

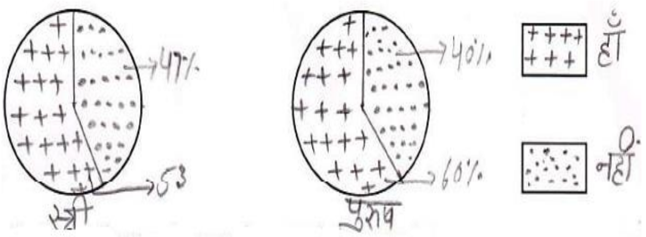

17. क्या नारी की स्थिति अब भी बच्चा पैदा करने की मशीन की तरह है इस प्रश्न पर सभी स्त्री व पुरूश असहमत थे। कोई भी इस कथन को उचित नही मानता ।

18. 87 प्रतिशत स्त्रियों का यह मत था कि आज यौन शिक्षा आवश्यक है जबकि 15 प्रतिशत स्त्रियां इसे आवश्यक नही मानती।

95 प्रतिषत पुरूष यौन शिक्षा को आवश्यक मानते थे जबकि सिर्फ 5 प्रतिशत पुरूषो का मानना था कि इसकी कोई आवश्यकता नही है।

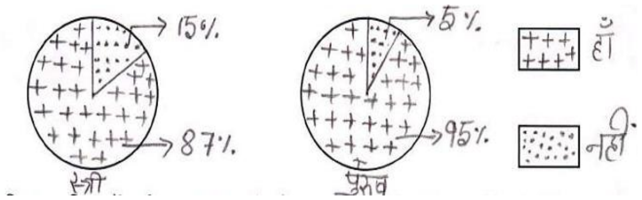

19. 75 प्रतिशत स्त्रियो की मान्यता थी कि आज नारी परिवार नियोजन व गर्भ निरोधक उपायो के प्रति सजग है जबकि 25 प्रतिशत पुरूषों का मानना था कि सजग नही है

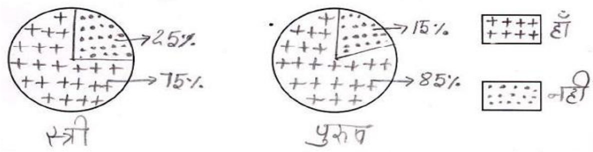

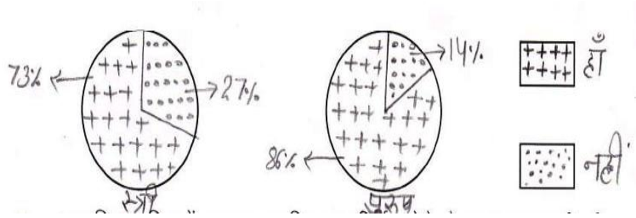

13. 85 प्रतिषत स्त्रियो का मत था कि आत्मनिर्भर होने के पष्चात लडकी की शादी करनी चाहिए जबकि 15 प्रतिशत स्त्रियो का विचार था कि ऐसा करने पर लडकी की उम्र ज्यादा हो जाती है।

70 प्रतिशत पुरूष भी नारी के आत्मनिर्भर होने के पश्चात शादी के पक्ष थे जबकि 30 प्रतिशत पुरूषों का मानना था कि यह उम्र शादी के लिए बडी है।

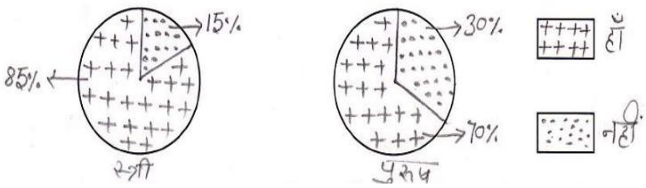

14. जब पूछा गया कि क्या आज सभी लोग शिक्षित नारी को जीवन साथी बनाना चाहते है तो 78 प्रतिषत स्त्रियो इस बात से सहमत थी व 22 प्रतिशत स्त्रियां असहमत थी

90 प्रतिशत पुरूश उपरोक्त कथन से सहमत थे जबकि सिर्फ 10 प्रतिशत असहमत थे।

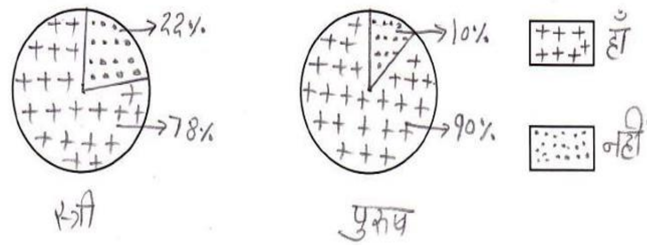

15. सभी स्त्री व पुरूश 18 वर्श के पश्चात गर्भ धारण को उचित मानते थे।

16. 53 प्रतिषत स्त्रियों का मानना था गर्भ निरोधक उपाय नारी के स्वरूप व भूमिका को प्रभावित करते है जबकि 47 प्रतिशत स्त्रियो का मानना था कि ये साधन नारी की भूमिका को प्रभावित नही करते है।

93 प्रतिषत पुरूषों का मत था कि नारी को आत्मनिर्भर होना चाहिए जबकि 7 प्रतिषत पुरूषों का मत इसके विपरीत था

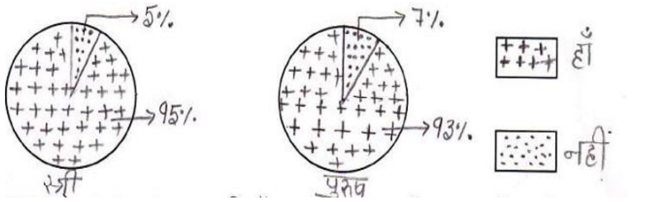

निष्कर्ष : ज्यादा से ज्यादा प्रत्युत्तरदायियो का मानना था कि आज की नारी घर के बाहर भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रही हैं इस प्रकार का बदलाव समाज को धनात्मक दिशा में ले जा रहा है। परन्तु कुछ प्रतिशत स्त्रियो का यह मानना था कि नारी का पारिवारिक दायरे से निकलना समाज द्वारा स्वीकार नही किया गया है। 90 प्रतिषत महिलाओ व 80 प्रतिशत पुरूषों का मत था कि नारी का कार्य क्षेत्र घर तक सीमित न होकर विस्तृत होना चाहिए व नारी को आत्म निर्भर बनना चाहिए।

11. 85 प्रतिषत स्त्रियो की मान्यता थी कि उम्र षादी की 18 वर्श उचित है जबकि 14 प्रतिषत स्त्रियां इस उम्र को सही नही मानती ।

93 प्रतिषत पुरुष उपरोक्त कथन से सहमत थे जबकि 7 प्रतिशत असहमत थे।

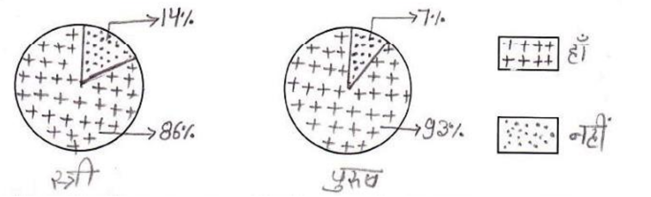

12. 73 प्रतिशत स्त्रियो का मानना था कि जीवन साथी का चुनाव माता–पिता द्वारा होना चाहिए जबकि 27 प्रतिषत स्त्रियां स्वयं के द्वारा चुनाव को उचित मानती थी। 86 प्रतिषत पुरुष माता–पित के द्वारा चुनाव को उचित मानते है जबकि 14 प्रतिशत पुरुष स्वयं द्वारा चुनाव को सही मानते है।

7. 87 प्रतिशत पुरूषों का मत था कि नारी हर क्षेत्र में अपना स्थान बना रही है जबकि 13 प्रतिशत पुरुषो की यह मान्यता नही थी।

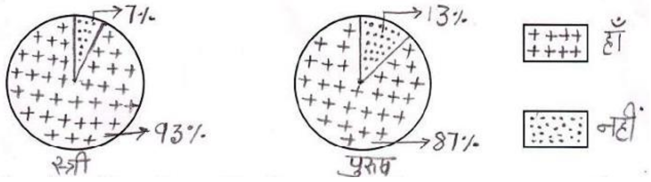

8. यह पूछे जाने पर कि नारी का पारिवारिक दायरे से निकलना समाज द्वारा स्वीकार कर लिया गया है तो 33 प्रतिशत स्त्रियो इससे सहमत थी व 67 प्रतिशत स्त्रियां असहमत थी। उपरोक्त प्रश्न से 60 प्रतिशत पुरुष सहमत थे जबकि 40 प्रतिशत पुरुष असहमत थे।

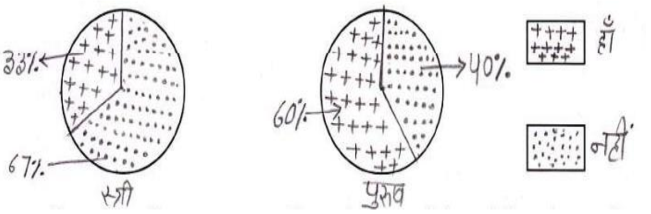

9. प्रतिशत स्त्रियों का मानना था कि नारी का कार्य क्षेत्र सीमित होना चाहिए जबकि 90 प्रतिशत स्त्रियों मानना था कि नारी का कार्य धर तक सीमित न होकर विस्तृत होना चाहिए।

www.ignited.in

पुरूषो की नजर में सिर्फ 20 प्रतिषत पुरूर्षो का मानना था कि नारी का कार्य क्षेत्र घर तक सीमित होना चाहिए। जबकि 80 प्रतिशत इससे सहमत नही थे।

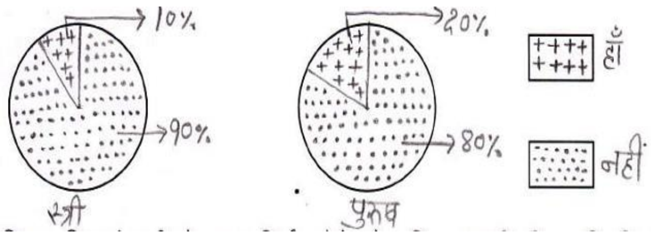

10. 95 प्रतिशत स्त्रियां नारी के आत्म निर्भर होने को उचित मानती थी जबकि सिर्फ 5 प्रतिशत स्त्रियां इसे अनुचित मानती थी।

परिणाम व परिचर्चा

दम्पतियों के उतर को प्रत्येक प्रश्न के अनुसार गणना करके उनके जोड को प्रतिशत के द्वारा प्रदर्शित किया गया है जो इस प्रकार है :–

1. आज के समाज में नारी की भूमिका बदल रही है इस प्रश्न पर 100 प्रतिशत स्त्री व पुरुष सहमत थे।

2. 98 प्रतिशत स्त्रियो का मानना था कि बदलती भूमिका का कारण शिक्षा है जबकि सिर्फ 2 प्रतिषत स्त्रियां इससे असहमत थी।

93 प्रतिषत पुरूश बदलती भूमिका का कारण शिक्षा को मानते थे जबकि 7 प्रतिशत पुरूश नही।

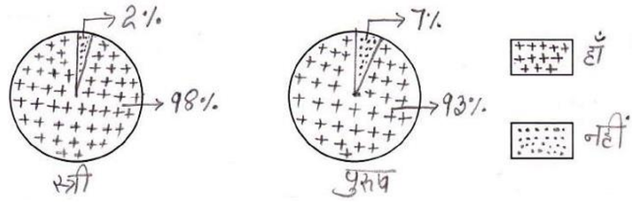

3. 100 प्रतिशत स्त्री पुरूशो का मानना था कि शिक्षा के कारण नारी की स्थिति में सुधार आया है।

4. 100 प्रतिशत स्त्री व पुरूष इस बात से सहमत थे कि नारी शिक्षा के कारण ही अपने अधिकारो के प्रति जागरूक हुई है।

5. 100 प्रतिशत स्त्री व पुरूष नारी शिक्षा को अनिवार्य कर दिये जाने के पक्ष में थे।

निष्कर्ष :– अधिकतर दम्पतियों का मत था कि आज समाज में नारी की भूमिका व स्थिति बदल रही है व ज्यादातर लोग बदलती भूमिका का कारण शिक्षा को मानते थे। यह मान्यता थी कि नारी अपने अधिकतरों के प्रति शिक्षा के कारण जागरूक हुई है।

6. 93 प्रतिशत स्त्रियां इस बात से सहमत थी नारी राजनैतिकए साहित्यिक व तकनीकी हर क्षेत्र में अपना स्थान बना रही है जबकि 7 प्रतिशत स्त्रियां असहमत थी।

(विधितन्त्र)

METHODOLOGY

प्रस्तुत अध्ययन जिसका विषय ''भारतीय नारी की समाज में भूमिका व उसका बदलता स्वरूप'' है जो कि निम्न आधार से प्रस्तुत किया गया है।

1. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :

a. भारतीय नारी की समाज में भूमिकाओ पर प्रकाश डालना।

b. भारतीय नारी के सामाजिक स्तर का अध्ययन करना।

c. वर्तमान भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति का अवलोकन करना।

2. प्रश्नावली का विवरण (Total Design and Description) : प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रष्नावली विधि का प्रयोग किया गया है जो अध्ययनकर्ता द्वारा स्वयं तैयार की गई। जिसे चार विभिन्नताओं के आधर पर तैयार किया गया, ये विभिन्नताएं निम्न है :

1. शैक्षणिक स्थिति 2. बाहरी संसार के प्रति जागरूकता 3. जीवन अनुभव जैसे–विवाह, गर्भ धारण, गर्भ निरोधक उपाय, 4 सामान्य आर्थिक स्थिति।

3. नमूना (Sample) : प्रस्तुत अध्ययन के लिए संगरिया कस्बे के 30 दम्पतियों का चयन किया गया, जिनका शैक्षणिक स्तर स्नातकोतर तक था ये दम्पतियों 30–35 वर्श के मध्य थे Sample का चयन उद्देश्य पूर्ण सुविधानुसार पद्धति के द्वारा किया गया है।

4. अध्ययन का क्षेत्र (Locak of Study) : प्रस्तुत अध्ययन के लिए दम्पतियों का चयन संगरिया कस्बे में किया गया, जो हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।

5. आंकडे एकत्र करने की विधि (Procedure of Dada collection) : चयनित दम्पतियो से व्यक्तिगत सम्पर्क विधि द्वारा प्रश्नावली भराई गई।